CHANDAMAMA (Hindi) MAY 1960 Regd. No. M. 5452

मार्कोपोलो की साहसिक यात्रायें

सात सौ वर्ष पहिले वेनिस नगर में दो भाई रहा करते थे। बड़े का नाम निकोलो पोलो और छोटे का नाम माफियो पोलो था। वे व्यापार करते करते कई देश हो आये थे। वे १२६० में कुस्तुन्तुनिया तक गये। और वहाँ से उनको एक साल तक सफ़र करके चीन देश के तातार सम्राट कुबिलाय खान के पास जाने का मौका मिला। उस समय में यूरोप से पूर्व के देशों तक इस तरह जानेवाला कोई न था। तातार मंगोलिया देश की एक जाति थी। वे असभ्य थे। १२०६ में वे अपने पुण्य-स्थल कारकोरम में एकत्रित हुए। उन्होंने तब चन्गेज़ खान को अपना नेता चुना। चन्गेज़ खान ने अपने बारह वर्ष के शासन के अन्दर ही चीन के उत्तर के स्वतन्त्र देश काते को जीतकर वश में कर लिया। फिर उसने सिवाय इन्डोचीन, भारत, अरब, यूरोप, पश्चिम यूरोप के बाकी और एशिया को भी जीत लिया। उन्होंने दो पुश्तों में इतना विस्तृत साम्राज्य स्थापित किया कि न उससे पहिले न उसके बाद ही इतना विस्तृत साम्राज्य स्थापित किया गया। चन्गेज़ खान के वारिसों को "बड़े खान" उपाधि भी मिली। काते उसके नीचे ही था। बाकी साम्राज्य तीन खानों के नीचे था। वे बड़े खान के आधीन थे।

काते पर शासन करनेवाले बड़े खानों में कुबलाय पाँचवाँ था। वह चन्गेज़ खान का पोता था। उसने पोलो भाइयों का

इस बार उनके साथ मार्को पोलो भी आया। पोलो भाइयों में से बड़े निकोले का यह लड़का था। यही मार्को पोलो था, जिसने पन्द्रह साल बड़े खान के दरबार में नौकरी करके अपने घर पहुँचकर संसार के भ्रमण के विषय में अपने अनुभव लिखे थे।

आदर किया। उनसे उसने संसार के अनेक देशों के बारे में जानकारी प्राप्त की। उसने उनको रोम में रहनेवाले पोप के पास दूत बनाकर भेजना चाहा। पोलो भाई इसके लिए मान गये। पर जब वे जाने को तैयार हुए तो मालूम हुआ कि पोप मर गया था और नये पोप की नियुक्ति नहीं हुई थी। इसलिए वे वेनिस नगर वापिस चले गये। वहाँ कुछ दिन रहने के बाद उन्हें भय हुआ कि बड़ा खान उनकी प्रतीक्षा कर रहा होगा, अतः वे फिर काते के लिए रवाना हुए।

* * *

ज्योर्जिया के राजाओं का नाम डेविड मालिक हुआ करता था। यह राजा तातारों का सामन्त था। ज्योर्जिया के लोग खूब सुन्दर और अच्छे योद्धा थे। सिकन्दर जब पश्चिमी देशों पर आक्रमण करने निकला, तब ज्योर्जिया में से होता नहीं जा सका था। क्योंकि जिस रास्ते पर उसको जाना था, उसके एक तरफ़ तो समुद्र था और दूसरी तरफ़ बड़े बड़े पहाड़। ऐसे जंगल थे, जिनमें घुड़सवार नहीं घुस सकते थे। समुद्र और पहाड़ के बीचवाले १४ मील लम्बे तंग रास्ते पर चाहे कितने भी आयें, कुछ सैनिक ही उनको रोक सकते थे। इसलिए सिकन्दर उस रास्ते नहीं जा सका। कहीं ज्योर्जियावाले उस पर आकर आक्रमण न करें, इसलिए उसने

वहाँ एक बुर्ज और किला बनवाया। उसे फौलादी फाटक भी कहते हैं।

ज्योर्जिया के उत्तर में काला सागर और पूर्व में बाकू समुद्र है। यह बाकू (कास्पियन) समुद्र सचमुच समुद्र नहीं है। यह एक बड़ी झील है। इसकी परिधि २,८०० मील है। इसमें कई ऐसे द्वीप हैं, जिसमें लोग रह सकते हैं। नगर हैं। तातारों ने जब फारस पर हमला किया तो आश्रयार्थी भागकर इन द्वीपों में और ज्योर्जिया के पहाड़ व जंगलों में रहने लगे।

बगदाद में ऐसे कारीगर थे, जो मोतियों में छेद किया करते थे। भारत से यहाँ मोती आया करते, और यहाँ से ईसाई देश जाया करते। यहाँ सोने और चान्दी के मूँगों से कपड़े बनाये जाते थे। उस इलाके में उससे बड़ा कोई नगर नहीं था। वहाँ इस्लाम धर्म ही नहीं, जादू, व अन्य शास्त्रों को सीखने के लिए सब सुविधायें थीं।

खलीफ़ा के पास इतनी धन सम्पत्ति थी, जो उस समय किसी और के पास नहीं थी। १२५८ में एक घटना घटी। १२५८ में हुलग खान नाम के एक बड़ा तातार ने अपनी सेना के साथ बगदाद पर हमला
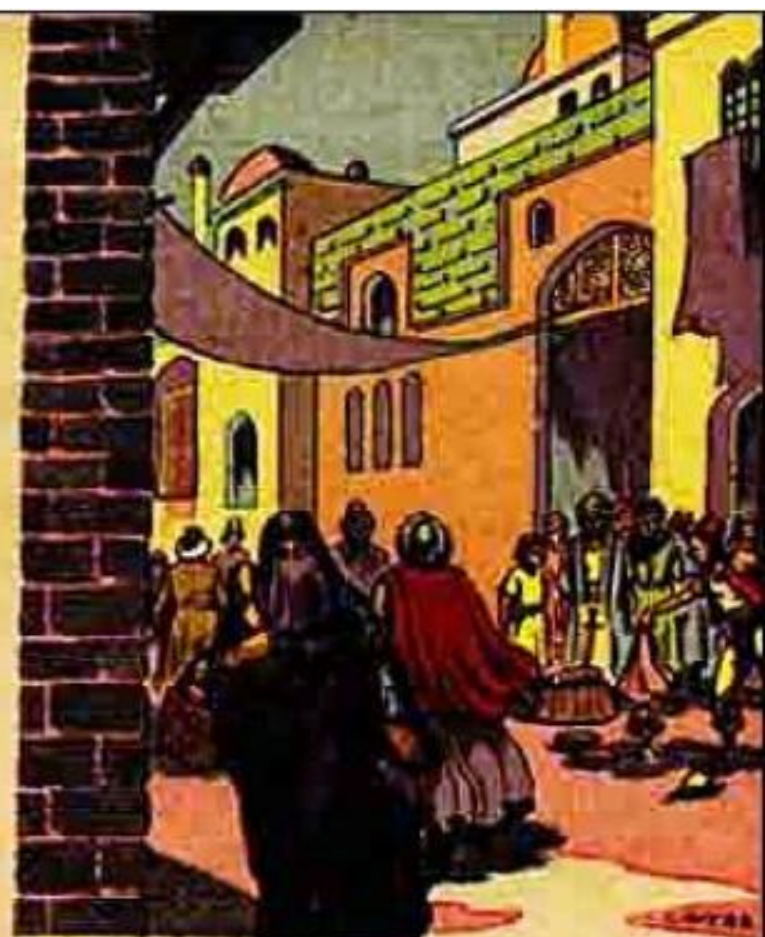
किया। यह मोंग खान का छोटा भाई था। ये चार भाई थे। काते को जीतने के बाद उन्होंने सारे विश्व को जीतने की ठानी। चारों चारों दिशाओं में निकल पड़े। हुलग दक्षिण की ओर गया। वह दिग्विजय करता करता बगदाद तक आया। बगदाद को सेना के बल से जीतना कठिन समझ कर उसने उसको चालाकी से जीतने का निश्चय किया। उसके साथ हजारों सिपाही तो थे ही, बीस हज़ार घुड़सवार भी थे। परन्तु उसने खलीफ़ा के मन में यह ख्याल पैदा किया कि उसके पास कम

सेना थी। बगदाद पहुँचने से पहिले उसने अपने अधिकांश सैनिकों को सड़क के दोनों तरफ़ के पेड़ों पर छुपा कर बगदाद के फाटक पर हमला किया।

यह समझ कि खान के साथ काफ़ी सेना न थी, खलीफ़ा लापरवाही के साथ अपनी सेना लेकर उसका मुकाबला करने निकला। यह देख हुलुग ने यह दिखाया जैसे वह उनको देखकर भागा जा रहा हो। उन्होंने शत्रुओं का पीछा किया, और फंस गये। हुलुग खान की सेना ने उनको घेर लिया और बन्दी बना लिया। बगदाद शहर के साथ खलीफ़ा भी तातारों के वश में आ गया।

एक बुर्ज़ में सोना भरा देखकर हुलुग बड़ा अचरज हुआ। बन्दी खलीफ़ा को अपने पास बुलाकर पूछा—"खलीफ़ा, यह सब सोना तुमने क्यों यों जमा कर रखा है? तुमने इससे क्या करने का निश्चय किया है? क्या तुम नहीं जानते थे कि मैं तुमको लूटने के लिए सेना के साथ आ रहा था? यह सब अपने सैनिकों और योद्धाओं को देकर क्यों नहीं उनसे शहर की रक्षा करने के लिए कहा?

क्या उत्तर दिया जाये, खलीफ़ा को न सूझा।

"क्यों कि तुम्हें धन से इतना प्रेम है, इसलिए तुम धन ही खाओ।" कहकर हुलुग ने खलीफ़ा को बुर्ज़ में बन्द कर दिया। यह भी आज्ञा दी कि उसको खाने के लिए कुछ न दिया जाय। चार दिन खलीफ़ा उस बुर्ज़ में कैद रहा। फिर वह मर गया। उसके बाद कोई खलीफ़ा नहीं हुआ। (अभी है)
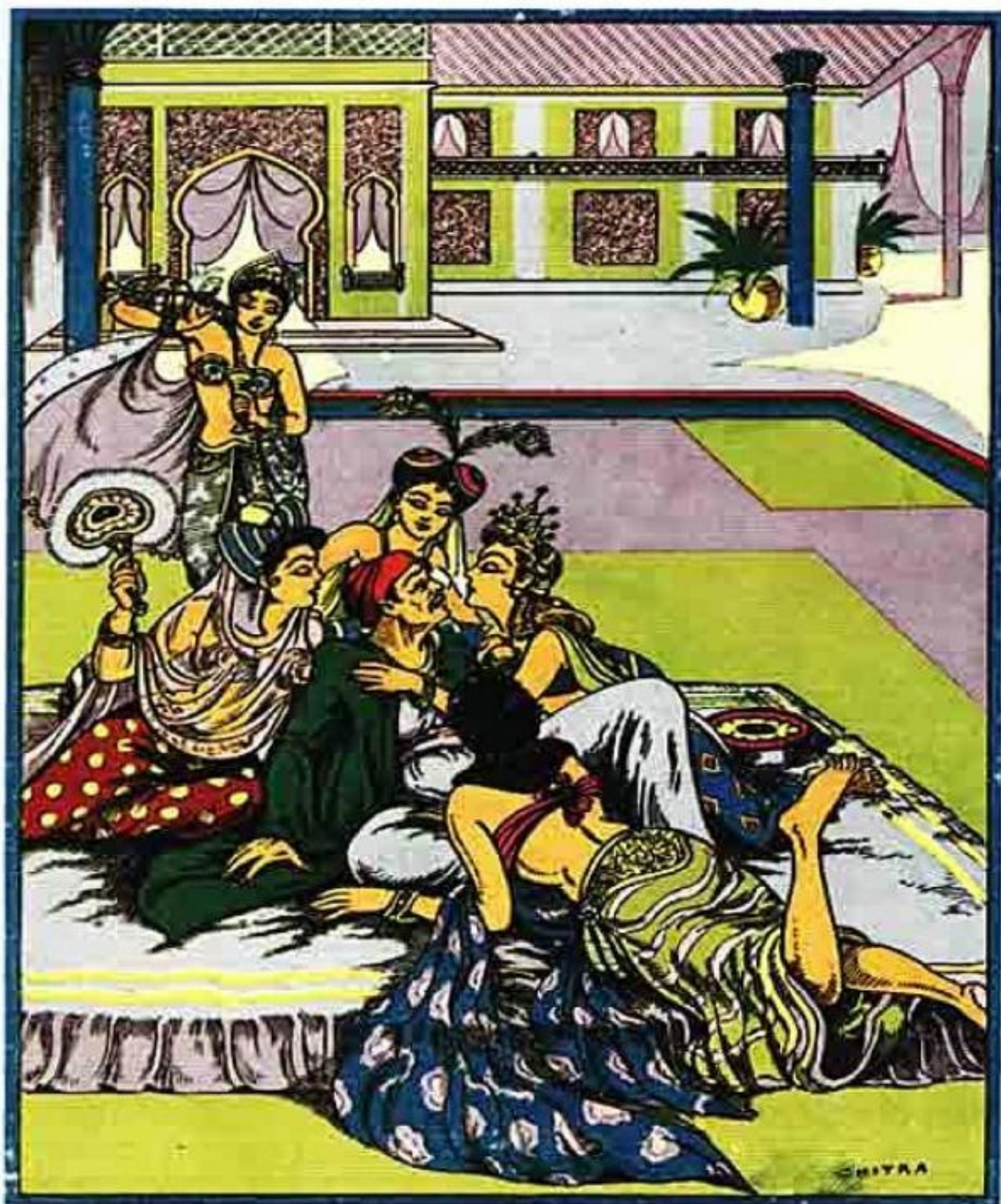
मार्कोपोलो की साहसिक यात्रायें

[२]

फ़ारस बहुत बड़ा देश है। उस में आठ राज्य हुआ करते थे—कास्विन, कुर्दिस्तान, लुरिस्तान, घलिस्तान, इस्फ़हान, शिराज, शबनकारा, तूनकैसल।

इन देशों में अच्छी नस्ल के घोड़े होते थे। वे भारत भी भेजे जाते थे। यहाँ गधों का भी काफ़ी उपयोग था। क्योंकि बिना बहुत कुछ खाये वे वह वजन उठाते थे जो घोड़े और खच्चर नहीं ले जा पाते थे। ये उन व्यापारियों के लिए बहुत उपयोग में आते जो एक देश से दूसरे देश को रेगिस्तान में से जाया करते। इन राज्यों में रहनेवाले दुष्ट और निर्दय थे। व्यापारियों को इन लोगों से नुक्सान न हो, खतरा न हो इसलिए तातार राजाओं ने बहुत से प्रबन्ध कर रखे थे। तब भी उनके हथकंडे जारी रहे।

फ़ारस के मुख्य नगरों में याज्द एक था। यह बहुत सुन्दर नगर था और व्यापार का केन्द्र भी था। यहाँ से सात रोज़ सफर करने के बाद कर्मान राज्य आता। यह फ़ारस की सीमा पर है। यहाँ पहाड़ों में खोदने से हीरे मिला करते थे। यहाँ ऐसे भी कारीगर थे जो लोहे से अच्छे हथियार बनाया करते थे। कर्मान राज्य के बारे में एक विचित्र कथा

कालीनें बिछाकर वहाँ अपने लोगों को वह दावत दिया करता। दावत खतम होने से पहिले ही वे, तू तू मैं मैं करने लगते। झगड़ते। कहने का मतलब यह कि बुजुर्गों का कहना ठीक निकला।

कर्मान नगर से नौ दिन के सफर के फासले पर रुद्बार नामक देश था। यहाँ करौना जाति के डाकुओं के गिरोह रहा करते थे। करौना मिश्रित जाति के थे यानि उनके पिता तातार थे और मातायें भारतीय।

निग्रादार नाम का तातार दस हजार सैनिकों को साथ लेकर आर्मीनिया से बदख्शान, पाशाय, काश्मीर आदि होता हुआ दिल्वार राज्य में आया। वहाँ के सुल्तान को, जिसका नाम असिदीन था, हराकर वह स्वयं राजा हो गया। उसके साथ जो तातार आये थे उनकी भारतीय स्त्रियों की सन्तान ही ये करौना थे। कहते हैं ये मलाबार से मन्त्र-शक्ति सीख कर आये थे। दिन दहाड़े ये अन्धेरा कर देते। व्यापारियों को लूटते। जो मुकाबला करते उनको मार देते। छोटों को पकड़कर गुलाम बनाकर बेच देते। रुद्बार के मैदान उपजाऊ थे। होर्मूज बन्दरगाह पहुँचकर भारतीयों

है। वहाँ के लोग शान्त, परोपकारी, और सीधे सादे हैं। एक बार कर्मान राजा ने अपने राज्य के बड़े बुजुर्गों को इकट्ठा करके कहा—"हमारे समीपवर्ती फारस में लोग धूर्त, दुष्ट और हत्यारे हैं। जब कि हमारे लोग सीधे सादे, भोले भाले हैं। इसका क्या कारण है? यह सन्देह मुझे बहुत सता रहा है।

बुजुर्गों ने कहा कि यह भेद मिट्टी में है। सुनते हैं, तुरत राजा ने इस्फ़हान आदमी दौड़ाये। और वहाँ से सात जहाज भरकर अपने देश में मिट्टी मँगाई। उस मिट्टी को कई कमरों में डालकर उस पर

के आने की इन्तज़ार करते। अपने ऊँटों और खच्चरों को इन मैदानों में चरने भेजा करते। इसलिए करौना इस प्रदेश में अधिक घूमा फिरा करते थे। मार्कोपोलो इनके हाथ में बिना पड़े जैसे तैसे निकल गया। उसके साथ जो थे उन में से कई उनके द्वारा पकड़े गये। और मार डाले गये।

यहाँ से होर्मूज बन्दरगाह तक दो दिन का सफर था। यह बहुत मशहूर बन्दरगाह था। व्यापार का बड़ा केन्द्र भी था। यहाँ बहुत गर्मी होती थी। कभी कभी गरमियों में रेगिस्तान की तरफ से ज़बर्दस्त लूह चला करती। इस लूह के कारण लोग खटमलों की तरह छटपटा कर मरते।

जो कर्मान से उत्तर की ओर जाया करते, उनका सफर बहुत ही खतरनाक रहता। तीन दिन तक रास्ते में पानी ही नहीं मिलता। उसके बाद एक गुप्त नदी मिलती थी। फिर चार दिन बिना पानी के रास्ते पर सफर करने बाद कूबनान नाम का नगर आता। यहाँ से तूनकैन राज्यों की ओर आठ दिन का रास्ता था। ये राज्य, फारस के उत्तर की सरहद पर थे। यहाँ एक बहुत बड़ा मैदान था।
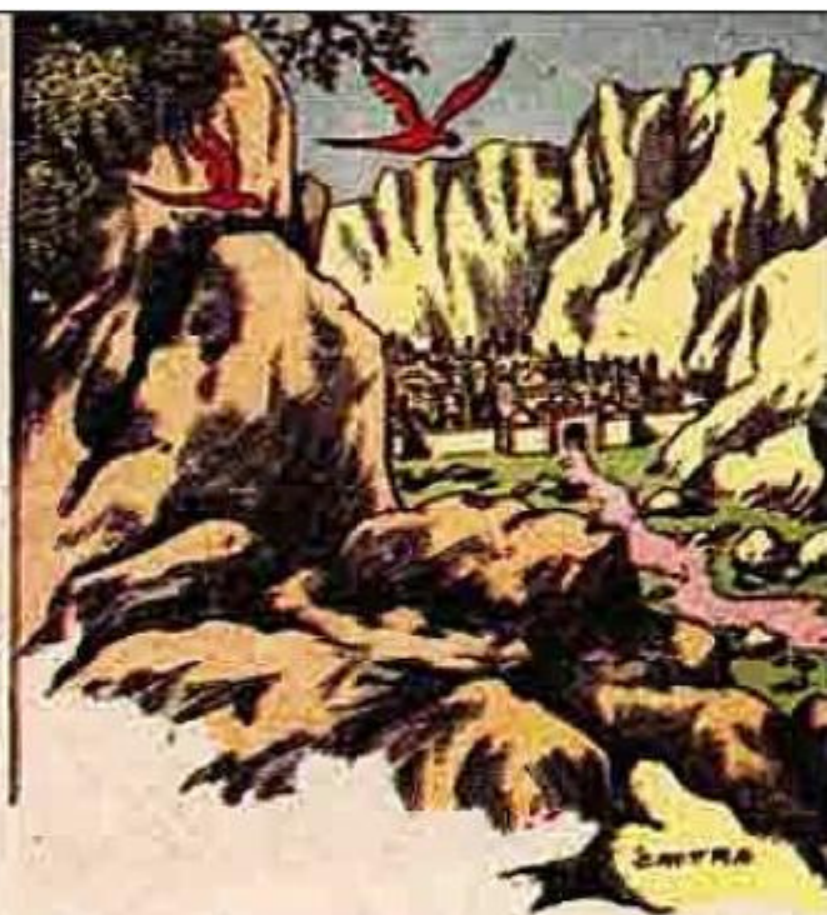
उसमें "एकाकी वृक्ष" था। इस वृक्ष से एक तरफ़ दस मील तक और तीनों ओर सौ मील तक कोई पेड़ न था। इसलिए इसे "एकाकी वृक्ष" कहा जाता था।

उसके बाद तुल्हत नाम का देश आता। यहाँ कभी एक "पहाड़ी राजा" रहा करता था। उसका नाम अल्लाउद्दीन था। उसने दो पहाड़ों के बीच की घाटी में बड़े-बड़े बाग बनवाये और बड़े आलीशान मकान भी बनवाये। उन मकानों में उसने बड़ी सुन्दर स्त्रियाँ रख रखी थीं। उस प्रान्त को देख स्वर्ग की भ्रान्ति होती थी। जैसे मोहम्मद ने

स्वर्ग की कल्पना की थी, वैसे ही यहाँ दूध, पानी, शराब की नदियाँ वह बहाया करता।

अगर वह अपने किसी दुश्मन की हत्या करवाना चाहता तो उनको वह अपने किले में जैसे भी हो ले आता। उनको नशे की चीज़ें देकर, बेहोशी के समय वह उनको बागों में स्त्रियों के पास पहुँचाता। होश आने पर उनको लगता, जैसे वे स्वर्ग में हों।

जब उनको हत्या के लिए भेजा जाता तो उनको नशे की चीज़ें देकर, फिर किले में लाया जाता। होश आते ही उन्हें लगता, जैसे वे स्वर्ग से दूर हो गये हों।

"अगर तुम फिर स्वर्ग जाना चाहते हो, तो फलाँ राजा को मारो। मैं फिर तुम्हें स्वर्ग में प्रविष्ट कराऊँगा।" किस किसको मारने के लिए, किसको भेजना होता था, यह "पहाड़ी राजा" बड़ी होशियारी से निश्चित करता। जब वे अपना काम करके वापिस आते तो उनके लिए बड़ी-बड़ी दावतें देता। जब वह उनको हत्या करने के लिए भेजता तो पीछे उनके अपने दूत भेजता, यह देखने के लिए कि वे उसकी आज्ञा का पालन कर रहे हैं कि नहीं। वे बिचारे जो सोचते थे कि वे स्वर्ग हो आये थे, मृत्यु की परवाह न करते।

छोटे खानों में से एक ने, जिसका नाम हुलाग था। इस पहाड़ी राजा के बारे में सुना। उसको मारने के लिए १२६२ में उसने एक बड़ी सेना भेजी। उस सेना ने आकर तीन साल तक उसके किले का घेरा डाला। जब खाने-पीने की चीज़ें किले में खतम हो गईं तो पहाड़ी राजा ने हथियार छोड़ दिये। तातार खान ने पहाड़ी राजा और उसके हत्यारों को मरवा दिया। इस तरह उसने लोगों का उपकार किया। (अभी है)

[३]

"पहाड़ी डाकू" का किला समृद्ध प्रान्त में था। उसको पार करने के लिए छः रोज लगे। इसके बाद बड़े बड़े रेगिस्तान आये। उनमें कई पचास साठ मीले चौड़े भी थे। कहीं भी एक बून्द पानी नहीं मिलता।

उस रास्ते में बाल्क नाम का एक नगर आता है। कभी यह बहुत बड़ा शहर था। परन्तु तातार और और जातियों ने इसको लूट कर नष्ट कर दिया। कितने ही संगमरमर के महलों के खण्डहर अब भी वहाँ थे। कहा जाता है कि इसी नगर में सिकन्दर ने फारस के राजा डेरियस की लड़की से विवाह किया था। अगर यहाँ से जनशून्य मार्ग पर ईशान्य की ओर चला जाये तो ताली खान नामक नगर आता है। इस नगर के दक्षिण में जो पहाड़ हैं, उसमें नमक की खाने हैं। इनमें इतना नमक है कि सारे संसार के खर्च के लिए काफ़ी हो सकता है।

सिकन्दर की और डेरियस की लड़की से जो सन्तान हुई और वह जिस देश पर शासन करती थी, उसका नाम बदखशान था। यहाँ एक पहाड़ में केम्प मिलते हैं। एक और पहाड़ में नील मणियाँ मिलती हैं। यह भी समृद्ध प्रान्त है। ठण्ड अधिक

पार करने के लिए बारह रोज लगते हैं। यहाँ के पहाड़ों और नदी नालों को पारकर चालीस दिन यात्रा करने के बाद बेलोर नाम का देश आता है। यहाँ से और आगे जाने पर काष्टर, समरकन्द, यार्कन्द देश आते हैं।

खोटान नगर, खोटान देश की राजधानी है। यह बड़े खान के साम्राज्य में है। इस देश में बहुत से नगर हैं। कपास खूब पैदा होता है। अंगूरों और फलों के बाग बहुत-से हैं। काष्टर से, येम तक का देश तुर्किस्तान कहलाया जाता है।

काष्टर के बाद रेतीली भूमि आती है। परन्तु असली रेगिस्तान लोम नगर के बाद ही शुरु होता है। यात्री यहाँ विश्राम करते हैं और महीने भर की रसद अपने लिए और अपने जन्तुओं के लिए लेकर आगे का सफ़र शुरु करते हैं। जहाँ रेगिस्तान कम चौड़ा है, वहाँ ही पार करने के लिए महीना लगता है और जगह इसे पार करने के लिए पूरा एक साल लगता है। इस रेगिस्तान को पार करना बड़ा खतरनाक है। अगर कोई यात्री पीछे रह गया या नींद से उठ न सका, तो उसकी मृत्यु अपरिहार्य

पड़ती है। क्योंकि पहाड़ी रास्ते बहुत संकड़े दुर्गम हैं इसलिए शत्रुओं का भय नहीं है। पहाड़ों पर हवा इतनी साफ़ है कि उस हवा से ही कई बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। यहाँ दो तीन पहाड़ों में गन्धक है। इसलिए वहाँ के पानी से रोगों का निवारण होता है। मार्कोपोलो ने स्वयं इसका अनुभव भी किया।

यहाँ से पामीर के पाठार तक जाने के लिए अट्ठारह दिन का सफ़र है। बताया जाता है कि पामीर संसार का सब से ऊँचा पठार है। यह पठार प्राणिरहित है। उसको

है। उसे कहीं से कोई आवाज सुनाई पड़ती है। ऐसा मालूम होता है, जैसे कोई पुकार रहा हो। उसे कभी-कभी आते जाते यात्री भी दिखाई देते हैं। इन सब भ्रान्तियों को न जानकर यात्री रास्ता भटक जाता है। इस तरह जान खो बैठनेवाले बहुत से यात्री हैं। इसलिए रेगिस्तान पार करनेवाले यात्री, भूलकर भी एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ते।

इस रेगिस्तान के बाद काबुल देश आता है। उसके बाद फिर एक छोटा रेगिस्तान है। इन रेगिस्तानों के बाद टान्गुट नामक देश आता है। उसमें सूचौ, कानचौ आदि बड़े नगर हैं। इसके बाद कारकोरम नगर है, जिसकी लम्बाई तीन मील है। तातारों ने अपना नगर छोड़कर, यहीं अपना निवास स्थल निश्चित किया। ये तातार पहिले मन्चूरिया के चोर्चा प्रान्त को बैकल झील के पास के इलाके में रहा करते थे। यहाँ बड़े-बड़े मैदान थे। जल की सुभीतायें भी थीं। पर बहुत लोग न थे। न उनका कोई सरदार ही था। परन्तु वे उन्ग खान के नीचे रहा करते थे। उसका नाम प्रेस्टर जोन भी था।

जब तातारों की संख्या बढ़ने लगी, तो प्रेस्टर जोन ने उनको कई गिरोहों में

विभक्त करके भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भेजने की ठानी। यह पता लगते ही तातार चुप चाप एक रेगिस्तान में चले गये और उन्होंने उसको कर देना भी बन्द कर दिया। कुछ दिनों बाद इन्हीं तातारों ने चेन्गेज़ खान को अपना सरदार चुना। तब संसार में जगह-जगह फैले हुए तातारों ने चेन्गेज़ खान को अपना राजा माना। उनकी संख्या बहुत बड़ी थी। जब उसे मालूम हुआ कि इतने आदमी उसके साथ थे, तो उसने उन सबको धनुष-बाण दिये और दिग्विजय के लिए निकल पड़ा। क्योंकि वह न्यायशील

परिपालक था, इसलिए जो हारता, वह भी उसका समर्थक बन जाता। समुद्र-सी विशाल सेना लेकर, उसने संसार को जीतने की ठानी। उसने खबर भेजी कि वह प्रेस्टर जान की लड़की से शादी करेगा। प्रेस्टर जान को गुस्सा आया। उसने कहा—"यह मेरा गुलाम है, इसका काम तमाम करके रहूँगा।" जब चेन्गेज़खान को यह मालूम हुआ तो वह बहुत-सी सेना लेकर प्रेस्टर जोन से युद्ध करने के लिए आया।

चेन्गेज़खान को आता देख प्रेस्टर जोन डरा नहीं। उसने भी अपनी सेना को सन्नद्ध किया। उसकी भी बड़ी सेना थी। चेन्गेज़खान ने अपनी सेना टेन्डुक मैदान में रखी। जब उसने ज्योतिषियों से परामर्श किया तो उसे बताया गया कि विजय उसी की थी। दो दिन बाद प्रेस्टर जान की सेना उस मैदान में आई। दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। दोनों तरफ़ के बहुत-से लोग मारे गये। परन्तु विजय चेन्गेज़खान की हुई। प्रेस्टर जोन युद्ध-भूमि में मारा गया। फिर कहा जाता है, चेन्गेज़खान ने उसकी लड़की से विवाह कर लिया। इस युद्ध के बाद उसने छः साल तक राज्य किया और बहुत से राज्य और देश जीते। फिर जब वह होचौ नगर पर आक्रमण कर रहा था, तो घुटने में बाण घुस गया। उसके कारण ही वह मर गया। चेन्गेज़ खान के बाद कुयुक खान, बाटूखान आदि बड़े खान के पद पर आये। मार्कोपोलो के समय बड़ा खान कुबलाय खान था। उसका साम्राज्य और बड़े खानों से कहीं बड़ा था। (अभी है)

मार्कोपोलो की साहसिक यात्रायें

[४]

चेन्गेज़ खान के वंशज जब मरते, तो उनके शवों को अल्ताई पर्वत के पास गाड़ा जाता। अगर वे उस पर्वत से सौ दिन के सफ़र की दूरी पर भी होते, तो वे वहाँ ले जाये जाते। जो कोई रास्ते में मिलता उसको मार दिया जाता और कहा जाता—"जाओ, दूसरे लोक में बड़े खान की सेवा करो।" इसी तरह रास्ते में घोड़े भी मार दिये जाते। मोन्गा खान जब मरा, तो उसके शव के सामने बीस हज़ार आदमी आये और उन सब को मार दिया गया। यह सच है। यह भी परम्परा थी कि जब बड़ा खान मरता तो उसके अच्छे घोड़े भी उसके साथ गाड़ दिये जाते। तातारों का विश्वास था कि परलोक में वे सब उसके उपयोग में आयेंगे।

इस सिलसिले में तातारों के बारे में कुछ ऐसी बातें हैं, जिनका जानना ज़रूरी है। वे हमेशा एक जगह नहीं रहते थे। सरदियों में गरम जगहों पर, गरमियों में ठंडी जगहों पर रहा करते। उनके घर बड़े हल्के होते थे। तख्तों से गोल गोल बना लिए जाते। चार पहियों की गाड़ियों पर वे एक जगह से दूसरी जगह ले जाये जा सकते थे। वे बरसात में गाड़ियों पर सफर किया करते। इन गाड़ियों में एक

बून्द पानी न गिरता। वे इन्हीं में रहते। इन्हीं में अपनी रसोई वगैरह भी करते।

तातार स्त्रियाँ ही रसोई करती है, खरीद-फरोख्त भी। मर्दों का काम शिकार खेलना, युद्ध करना आदि है। वे घोड़ों और कुत्तों का माँस भी खाते हैं। वे घोड़े का दूध भी पीते है। एक एक कुटुम्ब में दस बीस आदमी भी रहते हैं। परन्तु उनमें कोई ईर्ष्या या द्वेष नहीं होता। सब बड़े हिल-मिलकर रहते हैं। बच्चे सबकी सम्पत्ति माने जाते हैं। अगर तातार पालन-पोषण कर सकें तो सैकड़ों स्त्रियों से शादी भी कर सकते हैं।

वे सर्वेश्वर का ध्यान करते हैं। उनका विश्वास है कि ये सर्वेश्वर उनके शरीर और बुद्धि को बढ़ाता है। वे घरों में देवताओं की पूजा करते हैं। भोजन करने से पहिले वे उन देवताओं को भोजन नैवेद्य के रूप में देते हैं। वे बहुत बहादुर और साहसी होते हैं। वे बड़े से बड़े कष्ट झेल लेते हैं। वे घोड़ों पर से बिना उतरे, बिना खाये-पिये कई दिन तक युद्ध कर सकते हैं। युद्धभूमि से भाग जाना उनके लिए पराजय नहीं है। भागते भागते पीछा करनेवाले का निशाना लगाकर, वे बाण से मार देते हैं। इस तरह शत्रुओं पर यकायक वे युद्ध में अन्तिम विजय प्राप्त करते हैं। इसी कारण वे युद्ध करके सारी दुनियाँ को हरा सके। वे जब दिग्विजय के लिए निकलते हैं, तो साथ रसद वगैरह नहीं ले जाते हैं। अगर कहीं कुछ खाने को न मिला, तो अपने घोड़ों की धमनियों से खून निकालकर खून पीते हैं। उनकी मुख्य सम्पत्ति, घोड़े, ऊँठ, बैल, गौ, भेड़ हैं।

तातारों में एक परम्परा है। यदि एक की लड़की, और एक का लड़का मरता है, तो दोनों की आत्माओं का

शास्त्रोक्त रीति से विवाह करके, उनके माँ बाप समाधि बनाते हैं। दावतें भी दी जाती हैं। कई पीढ़ियों तक यह सम्बन्ध चलता है।

काते के रास्ते में बड़े खान के बहुत-से पड़ाव हैं। "चगन नोर" नामक जगह पर बड़े खान का एक राजमहल है। यहाँ बहुत-सी नदियाँ, झीलें हैं, उनमें हँस, और तरह तरह के शिकार के पक्षी मिलते हैं। शिकार के लिए बड़ा खान यहाँ आकर कभी कभी रहता है।"

शान्ग तु नामक नगर में एक और महल है। इसको कुबिलाय खान ने बनवाया है। इस महल को संगमरमर और और कीमती पत्थरों से बनाया गया है। यह अच्छी तरह अलंकृत किया गया है। इस महल के पीछे एक बड़ा उद्यान है। उसमें बड़े खान ने बाँसों से एक और मकान बनवाया हुआ है। यह भी बड़ा आश्चर्यजनक है। चाहो तो इसे खोलकर फिर बनाया जा सकता है।

जून, जुलाई, और अगस्त के महीने वहाँ गरमियों के महीने हैं। ये तीनों महीने बड़ा खान, शान्ग तु में बिताता है। अगस्त २४ को जब बड़ा खान जाने लगता है, तो बाँसोंवाला मकान खोल दिया जाता है। बड़ा खान प्रति वर्ष २४ अगस्त को ही जाया करता। यह ज्योतिषियों द्वारा निर्णीत मुहूर्त था।

बड़े खान के पास सफेद घोड़े, जिनको पवित्र माना जाना है, बहुत-से थे। उनके शरीर पर रत्ती भर भी दाग न होता। उनमें दस हज़ार घोड़ियाँ ही थीं।

कुबिलाय खान के पास तिब्बत और काश्मीर के तान्त्रिक थे। कहते हैं, ये

अपनी तन्त्रशक्ति से बड़े खान पर वर्षा न होने देते थे। वे हमेशा अपने शरीर पर भस्म लगाये रखते। मार्को ने यह भी मालूम किया कि वे जबर्दस्ती मारे गये लोगों की लाशें ले जाकर, छोटे मोटे देवताओं की पूजा किया करते।

कुबिलाय खान के पास कुछ और मान्त्रिक थे, जिनको "भिख्खु" कहा जाता था। बड़ा खान भोजन के लिए एक ऊँची वेदी पर बैठा करता। वह जिस तख्त पर बैठता उस तख्त से दस अंगुल दूरी पर, फर्श पर लोटों में दूध, शराब, व अन्य पेय रखे जाते। वे "भिख्खु" कुछ ऐसा जादू करते कि ये लोटे, स्वयं यानि बिना किसी के उठाये बड़े खान के पास चले जाते। दस हज़ार आदमियों के सामने वे अपनी शक्तियाँ दिखाया करते। मार्को का कहना है कि यह असत्य नहीं है।

ये "भिक्खू" जब देवताओं के लिए कोई प्रिय दिन आता तो उस दिन बड़े खान की सहायता से जोर-शोर से उत्सव मनाया करते। वे अपने अपने पद के अनुसार विवाह भी किया करते। एक और तरह के भी सन्यासी थे, जिनको "सियेन-सिन्ग" कहा जाता था। वे सिर मुंडाकर रहते। केवल चावल का माँड खाकर जीते। ब्रह्मचर्य का पालन करते और नीले रंग के वल्कल वस्त्र धारण करते। चटाइयों पर सोते। ये शायद शक्ति पूजक थे। क्योंकि उनके आराध्यों के नाम स्त्रियों के ही हैं। मार्को ने सोचा कि उतना कठिन जीवन व्यतीत करनेवाले संसार में और कहीं न थे।

मार्कोपोलो की साहसिक यात्रायें

[५]

कुबलायखान चेन्गेज़खान का वंशज था। वह बड़े खानों में एक था। "खान" का अर्थ, उनकी भाषा में राजाधिराज है। जितना साम्राज्य उसके नीचे था, उससे पहिले किसी और के पास न था। उसके सम्बन्धियों ने बहुत कोशिश की कि वह बड़ा खान न बने। परन्तु कुबलायखान ने उनकी सब कोशिशों पर पानी फेर दिया वह स्वशक्ति से खान बन गया। वह १२५६ में गद्दी पर बैठा।

बड़ा खान बनने के पहिले कुबलायखान हमेशा युद्ध करता रहता। युद्ध में उसने अद्‌भुत शक्ति-चातुर्य दिखाया। बड़ा खान बन जाने के बाद उसने १२८६ में ही एक बार युद्ध किया। वह यों हुआ कि उसके बन्धुओं में से नयन नाम के व्यक्ति ने एक और सम्बन्धी कायद से साजिश करके बड़े खान पर आक्रमण करके उसके राज्य का कुछ हिस्सा लेना चाहा। इस साजिश के बारे में मालूम होते ही कुबलायखान ने प्रतिज्ञा कि जब तक इन राजद्रोहियों का दमन नहीं करूँगा, तब तक मुकुट धारण नहीं करूँगा। इससे पहिले कि नयन की सेनायें, कायद की सेना से मिल सकीं कुबलाय ने उनको मार डालने की ठानी। वह अपने

घुड़सवार और पदातियों को लेकर युद्ध के लिए निकल पड़ा।

जब बड़े खान की सेना ने आक्रमण किया तब नयन की सेना डेरों में आराम से सो रही थी। उन्हें शत्रु का भय न था। जब तक कुबलायखान की सेना ने डेरों का घेरा नहीं डाला तब तक नयन को वास्तविक स्थिति का पता न लगा। इसके बाद दोनों की सेनाओं में भयंकर युद्ध हुआ। जो युद्ध सवेरे सवेरे शुरु हुआ था, दुपहर तक खतम नहीं हुआ। आखिर विजय कुबलायखान को मिली। नयन पकड़ा गया। वह राजवंश का था। उसका खून ज़मीन पर नहीं गिरना चाहिए था। उसकी मृत्यु सूर्य और चन्द्रमा को नहीं दीखनी चाहिए थी। इसलिए नयन को एक बोरे में डाला गया और उसको मरने तक इधर उधर घसीटा गया। नयन की मृत्यु का समाचार पाते ही कायद ने अपने विद्रोह के प्रयत्न छोड़ दिये। युद्ध के समाप्त होते ही कुबलाय अपनी राजधानी, खान बालिक वापिस चला गया।

कुबलाय राजनीति में भी चतुर था। उसके शासन में मुसलमान, ईसाई और मूर्तिपूजक भी रहा करते थे। नयन ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था। उसकी ध्वजा पर क्रोस का चिन्ह था। नयन के पराजित हो जाने के बाद बड़े खान के अनुयायियों ने परिहास किया कि क्रोस उनकी रक्षा न कर पाया था। कुबलाय ने उनको समझाया। नयन के ईसाई अनुयायियों से कहा—"नयन के पराजय का कारण यह क्रोस बिल्कुल नहीं है। क्रोस धर्म की रक्षा करता है, अधर्म की नहीं। विद्रोह के लिए षडयन्त्र करके नयन ने अधर्म के पथ पर पैर रखा था इसलिए क्रोस ने

उसकी रक्षा न की।" इन बातों से ईसाई योद्धा सन्तुष्ट हुए।

कुबलायखान की चार पत्नियाँ थीं। वे सब महारानी के पद पर थीं। उनमें से किसी एक का भी लड़का, बड़ा खान बनने का अधिकारी था। हर रानी का अपना अलग दरबार और दस हज़ार तक नौकर चाकर हुआ करते थे। कुबलायखान के चारों रानियों से बाईस लड़के थे। इनमें से बड़े का नाम, उनके परदादा का था, यानि चेन्गेज़खान। क्योंकि वह असमय में मर गया था इसलिए इसका लड़का तैमूर, कुबलाय के बाद बड़ा खान बना। यही नहीं, उपपत्नियों से कुबलायखान के पच्चीस लड़के थे। इन बच्चों के पास छोटी छोटी रियासतें और जागीरें थीं।

काथे देश का मुख्य नगर खान-बालिक था। यहाँ बड़े खान का एक बड़ा किला था। उसके परकोटे, जिधर देखो उधर मीलों दूर चले गये थे। उसके अन्दर एक और परकोटा था। इसके अन्दर राजमहल था। यह दस बालिश्त ऊँचे संगमरमर के चबूतरे पर बना एक मँजिला महल था। इसमें एक ऐसा हॉल था, जिसमें एक साथ
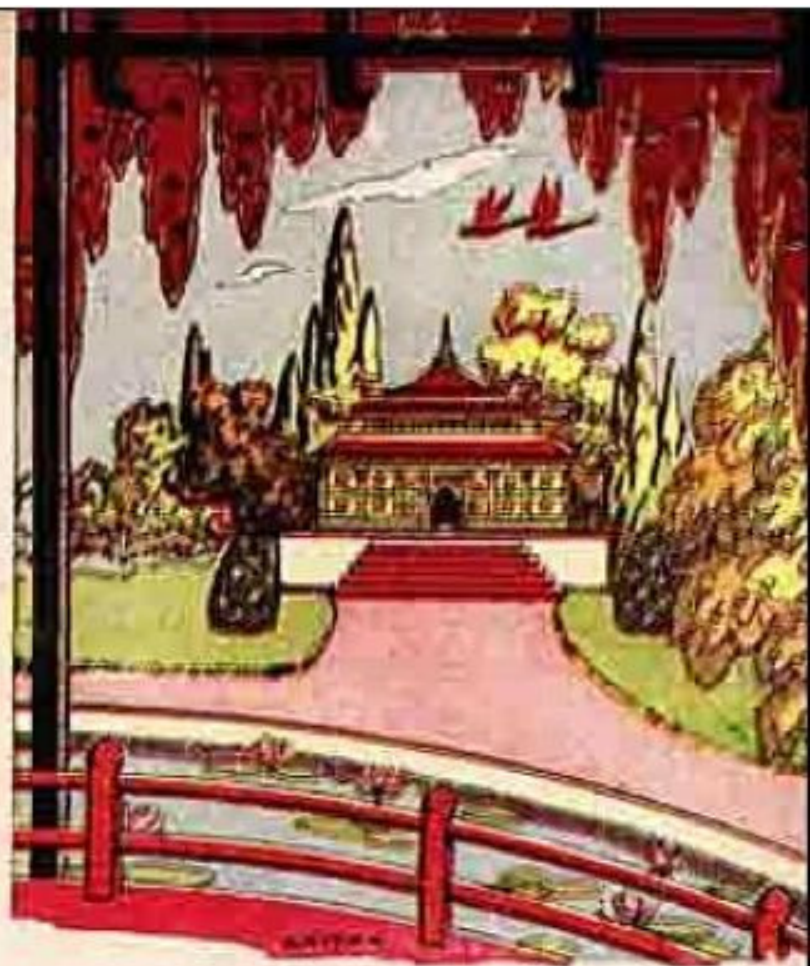
छः हज़ार आदमी बैठकर खा सकते थे। इसमें असंख्य कमरे थे। इस महल के पिछवाड़े के कमरों में बड़े खान के सोना, चान्दी, हीरे मोती के ढेर रखे होते थे। इस किले के आँगन में बड़े खान ने एक बड़ा-सा टीला बनवाया। उसपर उसने सदा बहार पेड़ लगवाये। पेड़ों के बीच उसने हरे रंग का महल बनवाया। इसलिए वह टीला हमेशा हरा रहता और आँखों को बहुत भाता।

बड़ा खान खान-बालिक में साल में तीन महीने ही रहा करता था। बाकी समय में, अहमद नाम का शासक नगर पर

शासन किया करता था। यह अहमद बड़ा दुष्ट था। इसने कई सुन्दरियों को कैद कर रखा था। वह जिनको चाहता उनको नौकरी देता, जिनको नहीं चाहता, उनके सिर कटवा देता। क्योंकि बड़े खान को इस पर पूर्ण विश्वास था इसलिए इसने बाईस वर्ष तक जनता को सताया। उसने अपना निरंकुश शासन जारी रखा। इसके बाद वान हू चेयेन हू नाम के दो काथे के नागरिकों ने उसको मारने के लिए षड़यन्त्र सोचा। बड़ा खान, और उसका बड़ा लड़का, खान-बालिक में न थे। मौका देख एक दिन रात को वान हू राजमहल में घुसा, अपने चारों ओर उसने खूब रोशनी करवाई। उसने अहमद के पास खबर भिजवाई कि युवराज चिन्गेज़खान तभी आये थे, और उसको बुला रहे थे। अहमद राजमहल में आया उस रोशनी में उसकी आँखें चौंधिया गईं। अहमद ने वान हू को चेन्गेज़खान समझकर, उसके सामने घुटने टेके तुरत चियेन हू ने तल्वार से अहमद का सिर काट दिया। परन्तु षड़यन्त्रकारी सैनिकों के हाथ पकड़े गये। वान हू सिंहासन पर ही था कि बाण की चोट खाकर मर गया।

बड़ा खान, खान-बालिक आया। उसने जब तहकीकात करवाई, तो अहमद और उसके पचीस लड़कों के कारनामों की पोल खुली। उसने अहमद की लाश कुत्तों को खिल्वायी और उसने जो कुछ कमाया था, उसे अपने आधीन कर लिया।

ये सब घटनायें, जब मार्कोपोलो उस नगर में था, तभी हुईं।

मार्कोपोलो की साहसिक यात्रायें

[६]

जब वह कुबिलायखान की नौकरी में ही था कि मार्कोपोलो को राज्य के कार्य पर पश्चिम की ओर चार महीने यात्रा करनी पड़ी। खान-बालिक (पेकिन्ग) से चलने के बाद, तीन सप्ताह की यात्रा के उपरान्त काय-चु का दुर्ग मिला। इस दुर्ग को पहिले किसी ज़माने में सोने के राजा ने बनवाया था। यह सोने का राजा बड़ा शक्तिशाली था। उसकी सेवा करने के लिए सुन्दर नवयुवतियाँ ही काम करती थीं। कई सारी युवतियाँ उसकी नौकरी में थीं। वह अपने महल के आस पास एक हल्के रथ पर चढ़कर घूमा करता। ये लड़कियाँ रथ खींचतीं।

सोने का राजा होने को तो उन्ग खान (पेस्टर जान) का सामन्त था परन्तु चूँकि वह शक्तिशाली था, इसलिए उसने उसकी परवाह न की। दोनों में युद्ध हुआ। उन्ग खान, सोने के राजा को हरा न सका, चूँकि उसका दुर्ग अभेघ्य था। उन्ग खान गुस्से में जलने-सा लगा। तब उसके सात नौकरों ने प्रतिज्ञा की कि वे सोने के राजा को जीवित पकड़कर अपने राजा को सौंप देंगे। उन्ग खान यह सुनकर खुश हुआ। उसने कहा कि यदि उन्होंने यह कर

दिखाया तो वह उनको अपनी ओर से इनाम देगा।

वे सातों निकलें। उन्होंने सोने के राजा के यहाँ नौकरी करनी शुरू की। उन्होंने दो वर्ष तक खूब सेवा की। फिर वे उसके विश्वासपात्र भी हो गये। उसको उन पर अपने पुत्रों से भी अधिक विश्वास था। जब कभी वह शिकार पर जाता, तो उनको साथ ले जाता।

एक बार जब वह शिकार पर जा रहा था, तो उन सात नौकरों को भी ले गया। साथ कुछ और भी थे। राजमहल से एक मील की दूरी पर एक नदी आई। राजा ने और लोगों को नदी के किनारे छोड़ दिया और सात नौकरों के साथ नदी पार कर गया। ऐसे मौके के लिए ये सातों नौकर प्रतीक्षा कर रहे थे। सोने के राजा की रक्षा करने के लिए वहाँ कोई न था।

उन्होंने तल्वार पकड़कर पूछा—"तुम हमारे साथ आते हो, या मरते हो!" राजा को उनकी हरकत देखकर अचरज हुआ—"यह क्या! तुम मुझे कहाँ साथ बुला रहे हो!"

"अपने राजा उन्ग खान के पास।" उन्होंने जवाब दिया।

"तुम मुझे इतना धोखा कैसे दे सके! मैंने तुम्हें अपने पुत्रों से भी अधिक समझा, क्या इससे बढ़कर भी कोई कृतघ्नता है कि जो हाथ खिलाये, उसे ही काटो!"

वे सोने का राजा को उन्ग खान के पास ले गये।

उन्ग खान ने सोने के राजा को देखकर कहा—"तुम्हें देखकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है। तुम जानते हो, तुम्हारा कैसे स्वागत किया जायेगा!"

सोने के राजा को न सूझा कि क्या कहे। उन्ग खान ने उसको पशुपालक का

काम दिया। सोने के राजा का अपमान करने के लिए उसने उसको यह दण्ड दिया।

दो साल सोने के राजा ने पशुपालक का काम किया। तब तक राजसैनिकों का उस पर पहरा रहा। दो साल बाद उन्ग खान ने सोने के राजा को बुलवाया। उसको राजा की पोषाक देकर उसका सत्कार किया—"अब तो समझे कि मुझ से दुश्मनी मोल लेना अच्छा नहीं है, महाराज?

"हाँ महाराज, मैं जानता था कि आपका विरोध करके कोई जी नहीं सकता। सोने के राजा ने कहा।

"यही मैं चाहता हूँ।" कहकर उन्ग खान ने उसको एक घोड़ा और कुछ नौकर चाकर देकर भेज दिया।

* * *

मार्कोपोलो के मार्ग में एक और नगर आया, इसका नाम था वोचान। इसके बारे में भी एक कथा थी। १२७२ ई. वी. से पहिले बेन्गाल और बर्मा देशों का एक राजा हुआ करता था। वह बड़े खान के नीचे न था। यह देख कि वोचान को हमले का भय था बड़े खान ने

नजुरुद्दीन नामक तातार नायक के नीचे कुछ सेना वोचान भेजी।

इस सेना का मुकाबला करना बेन्गाल-बर्मा के राजा ने अपना धर्म समझा, बड़ी से सेना लेकर उसने कूच की। उस सेना में दो हज़ार हाथी थे जिन पर अम्बारियाँ थीं। एक एक अम्बारी में १२ से लेकर सोलह योद्धा थे। इन हाथियों के अलावा उस सेना में चालीस हज़ार सैनिक थे। इनमें अधिकांश घुड़सवार थे।

यह सेना देखकर नजुरुद्दीन घबरा गया। उसके पास केवल बारह हज़ार घुड़सवार

थे। फिर भी उसने अपने सैनिकों को युद्ध के लिए सन्नद्ध किया और जो होना था, उसकी प्रतीक्षा करने लगा। वर्मा बेन्गाल के राजा की सेना के दीखते ही, तातारों के घोड़े, हाथियों को देखकर डरकर पास के जंगलों में भाग गये। उनको पकड़ना मुश्किल हो गया।

यह एक प्रकार से अच्छा ही हुआ। तातार सैनिक पेड़ों के पीछे अपने घोड़ों से उतर गये और वर्मा-बेन्गाल के राजा के सैनिकों पर बाण वर्षा करने लगे। हाथियों को घायल कर दिया। हाथी चिंघाड़ते इधर उधर भाग गये। उनके साथ घोड़े भी भाग निकले। इस समय तातारों ने अपने घोड़ों पर चढ़कर उनका पीछा किया।

दोनों पक्ष के लोग तलवार और गदा लेकर युद्ध करने लगे। इस युद्ध में राजा की सेना को बहुत चोट लगी। राजा बाल बाल बचा और योद्धा भी भाग गये। नहीं तो वे भी उस दिन युद्धभूमि में मारे जाते।

तातारों ने हाथियों को पकड़ने के लिए उनके रास्तों में पेड़ काटकर डाल दिये, और भी कई प्रयत्न किये। परन्तु वे सब प्रयत्न व्यर्थ रहे। आखिर राजा के उन सैनिकों ने, जो कैदी बना लिए गये थे, कुछ हाथियों को पकड़कर दिया। इस तरह तातारों को दो सौ हाथी मिले। इसके बाद बड़े खान के साथ बहुत-से हाथी भी जाने लगे।

इस युद्ध के बाद बेन्गाल-बर्मा का राजा भी बड़े खान के आधीन हो गया।

(अभी है)

[७]

कारामोरान नदी के दक्षिण में मंजी नाम का एक बड़ा देश था। यह बहुत ही सम्पन्न था। इस देश का, बड़े खान के जीतने से पहिले, फक्फूर नाम का एक राजा था। सिवाय बड़े खान के फक्फूर से बड़ा कोई राजा न था। यह राजा अदर्श रीति से प्रजा का पाल्न किया करता था। निर्धनों के प्रति बहुत दया दिखाता। अगर गरीब अपने बच्चों को पाल न पाते, तो वह उन बच्चों की जन्मपत्री लिखाता, अनाथालय में उनको रखता, उनका पाल्न-पोषण करता। उस देश में इस तरह अनाथालय कितने ही थे। उसमें २० हज़ार बच्चे राजा के खर्च पर पल रहे थे।

इस राजा की एक और आदत थी। यदि वह कहीं जा रहा होता और रास्ते में दो बड़े मकानों के बीच कोई फूस का घर होता, तो पूछताछ करता कि ऐसा क्यों था, अगर माळूम होता कि बीच के घरवाला गरीब था, तो वह दोनों तरफ़ के मकानों के बराबर बीच का घर भी बनवाकर देता।

पर इस राजा में एक कमी भी थी—वह यह कि वह योद्धा न था। जनता भी युद्ध न करना जानती थी। इसका कारण,

मार्कोपोलो की साहसिक यात्रायें

मंजी देशवासियों का चिर काल से शान्ति और शान्ति से सम्बन्धित सुखों का अनुभव करना ही था। इस देश पर कभी किसी ने आक्रमण न किया था। इस देश के प्रति नगर के चारों ओर बड़ी-बड़ी खाइयाँ थीं। इनको पार करने के लिए पुल थे। शत्रुओं का इन खाइयों को पार करके शहर पर हमला करना असम्भव-सा था।
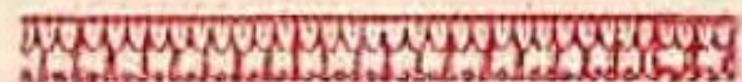
क्योंकि मंजी देश में योद्धा न थे, न घोड़े ही, इसलिए बड़ा खान इस देश को जीत सका, नहीं तो उसके लिए भी इसपर हमला करना असम्भव था। ज्योतिषियों ने भी इस देश के विषय में बताया था कि जब तक सौ आँखोंवाला नहीं आता, तब तक इस देश को शत्रु का भय न था।

बड़े खान कुबिलाय खान के नीचे बारह शक्तिशाली सामन्त थे। उनमें बचान चिन्ग सियान्ग भी एक था। १२६८ ई. मे. बड़े खान ने इस बचान को बहुत-से घुड़सवार सेना और बहुत-सी नावें देकर मंजी देश को जीतकर आने के लिए कहा।

नावों की सहायता से नदी पार करता, बयान ने मंजी राज्य में प्रवेश किया। छाय-न्गान चौ नगर में घुसकर उसने लोगों से हार स्वीकार करने के लिए कहा। जनता ने वैसा करने से इनकार कर दिया। बयान ने उनका कुछ न बिगाड़ा। वह एक और नगर में गया। उस नगर के वासियों ने भी घुटने टेकने से इनकार कर दिया। इस तरह पाँच नगरों में गुज़रने के बाद छटे नगर को उसने कब्जे में कर लिया। कहा जाता है कि उसने इस नगर के सब वासियों को मरवा भी दिया।

यदि बयान ने पहिले पाँच नगरों में कुछ न किया था, तो इसका कारण था। वह जानता था कि बड़ा खान उसके पीछे

एक और बड़ी सेना भेज रहा था। उन पाँचों नगरों को छोड़कर बयान ने एक के बाद बारह नगर जीते। फिर मंजी की राजधानी किन्साय नगर में पहुँचा। राजा और रानी इसी किन्साय नगर में रहा करते थे।

राजा डर गया। हज़ार नौकाओं में अपनी सेना को चढ़ाकर समुद्र के द्वीपों में चला गया। उन द्वीपों से वह फिर वापिस न आया। इस बीच, रानी ने राजधानी में रहकर बयान के हमले का मुकाबला करने की कोशिश की। इतने में उसको मालूम हुआ कि उसकी शत्रु सेना का सेनापति का नाम बयान था। बयान का अर्थ सौ आखोंवाला है। उसे ज्योतिषियों की बात याद आई, तुरत निराश हो उसने हार स्वीकार कर ली।

जब राजधानी ही बड़े खान के हाथ आ गई, तो और नगरों ने भी अपने को उसे सौंप दिया। एक ही एक नगर ने पराजय न मानी। उसका नाम सियान्ग-यून्-पू था। मंजी देश के वश में आने के तीन वर्ष बाद भी यह नगर घेरा डाले शत्रु सेना से लोहा लेता रहा।

यह कैसे सम्भव हो सका? यद्यपि बड़े खान की सेना ने इसे घेर तो लिया था, वे इसे क्यों न जीत सके?

इस नगर के तीन तरफ़ गहरी झील थी। यह उनकी शत्रुओं से रक्षा करती रही। केवल उत्तर की तरफ़ से बड़े खान की सेना आक्रमण कर सकती थी। नगरवासियों ने शत्रुओं के घेरे की कोई परवाह न की क्योंकि वे अपनी आवश्यक वस्तुयें झील पार कर ले आते थे। इसलिए घेरा बिल्कुल असफल रहा। पालोल, मार्को और उनके पिता, जो बड़े खान के यहाँ काम करते थे,

यदि उनकी सहायता न करते तो सियान्ग-यून्ग-पू कभी भी बड़े खान के हाथ न आता।

एक दिन सियान्ग-यून्ग-पू से कुछ लोग बड़े खान के पास गये और उसको बताया कि क्यों तीन सालों से घेरा असफल रहा था।

"इस नगर को जीतने के लिए कुछ न कुछ तो करना ही होगा।" बड़े खान ने कहा।

तब पालोल ने बताया कि उस नगर को जीतने का एक साधन था और उसको बनानेवाले भी बड़े खान के साथ थे। वह पत्थर फेंकनेवाला यन्त्र था। सौ धन भारी पत्थर भी वे बहुत दूर फेंक सकते थे।

"तो ऐस यन्त्रों को तुरत बनवाओ।" बड़े खान ने पोलो को आज्ञा दी। पालोल के आदमियों में ये यन्त्र बनानेवाले दो थे। उन्होंने तुरत तीन यन्त्र तैयार किये। बड़े खान और उनके कर्मचारी उनका उपयोग देखकर बड़े आनन्दित हुए।

बड़े खान के सैनिक इन यन्त्रों को सियान्ग-यान्ग-पू तक पहुँचाया। इस यन्त्र का छोड़ा हुआ बड़ा-सा पत्थर जब नगर के मकानों पर पड़ा, तो हाय-हाय मच गई। लोग डर गये। उन्होंने सोचा कि इस उत्पात का निवारण उनके पास न था। यह सोच उन लोगों ने भी उन्हीं शर्तों पर नगर को समर्पित कर देना का निश्चय किया, जिन शर्तों पर और नगरों को बड़े खान ने अपने वश में किया था।

(अभी है)
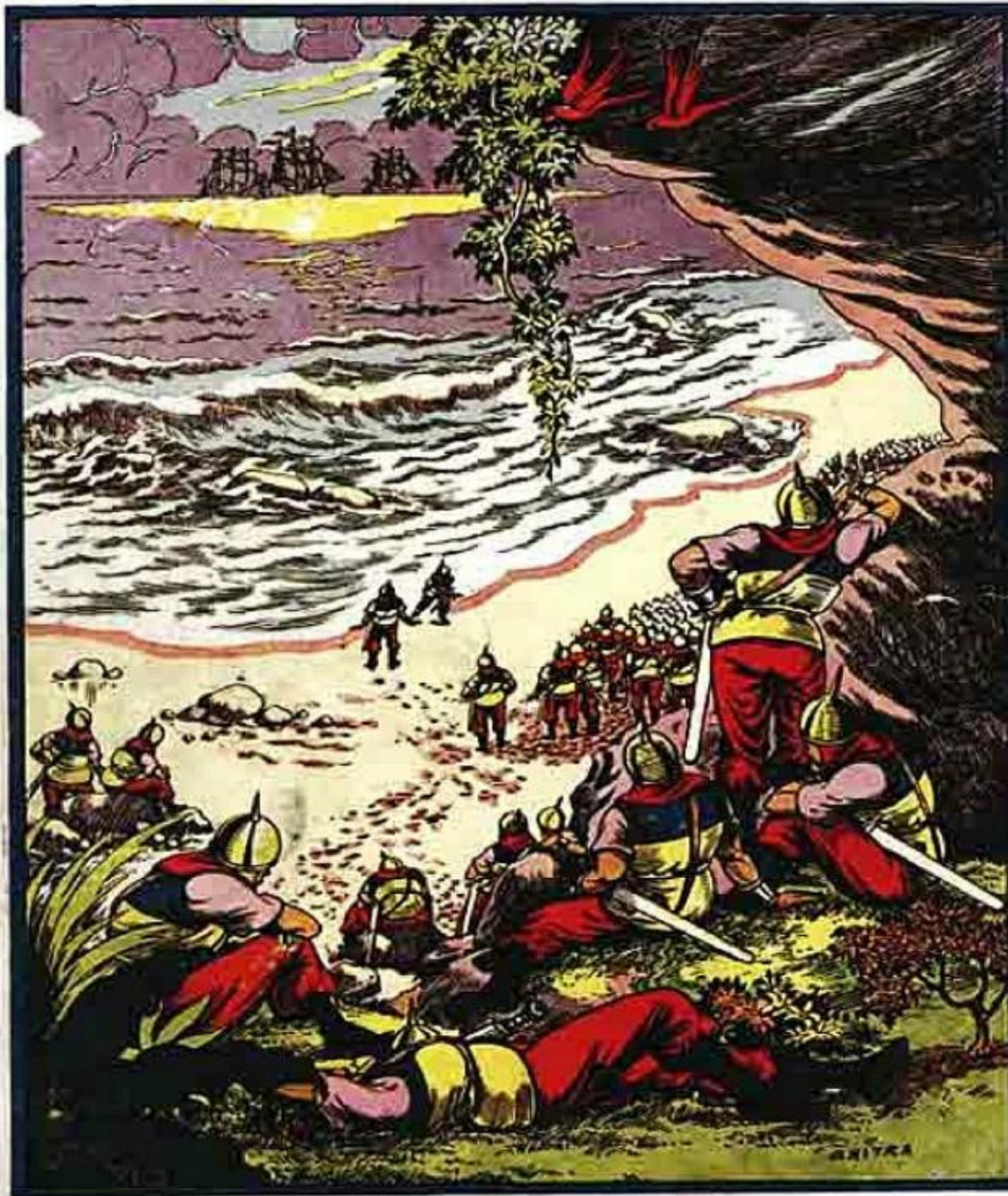
मार्कोपोलो की साहसिक यात्रायें
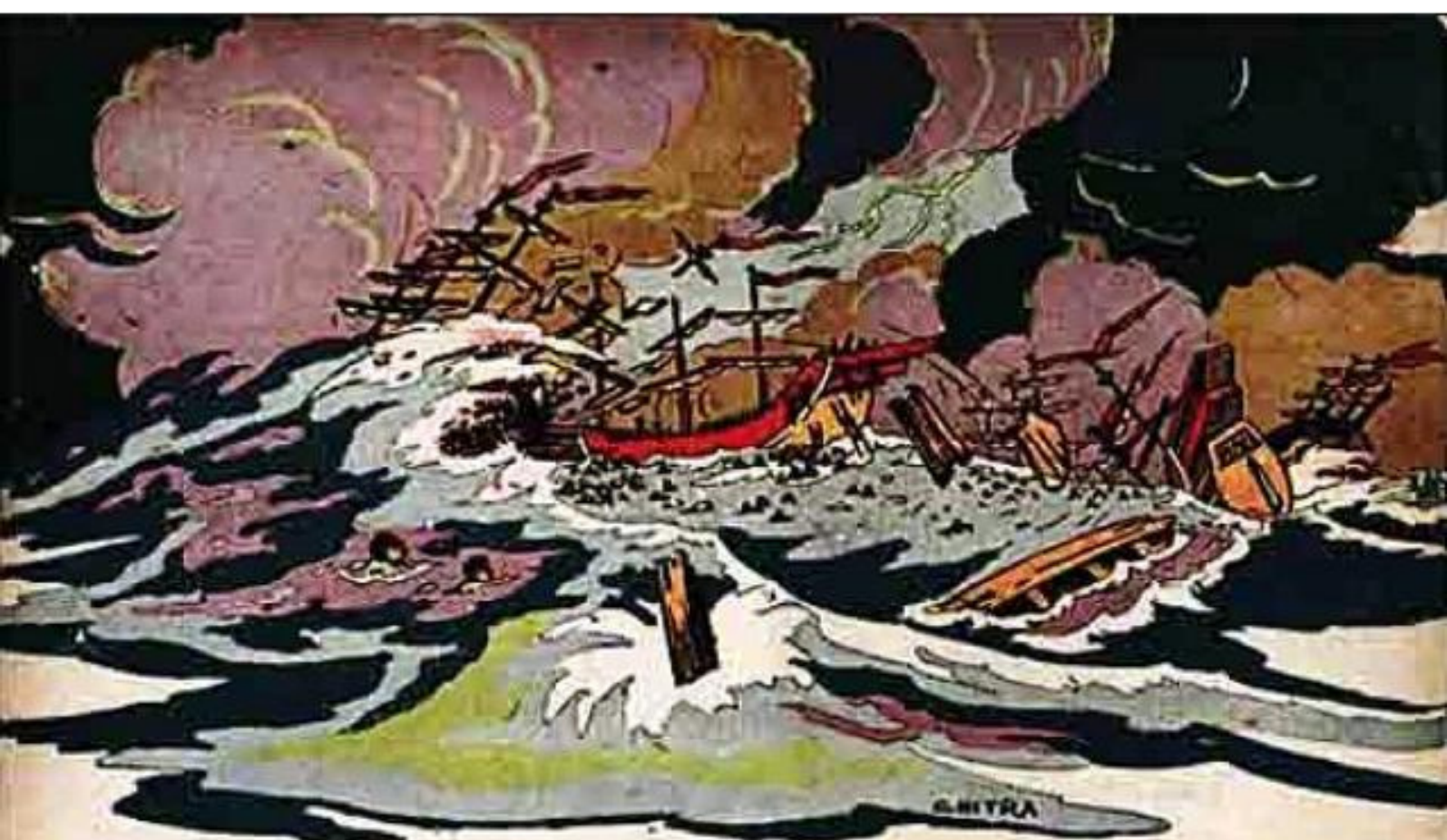
[८]

मार्कोपोलो, जब वह बड़े खान की नौकरी में था, हमारे देश आया। यहाँ वह बहुत दिन तक रहा और उसने बहुत कुछ देखा भाला। इस यात्रा का वर्णन करते हुए उसने जापान, पूर्वी द्वीप, लंका आदि के बारे में भी बहुत-सी जानकारी दी।

यह सुन कि जापान देश श्री सम्पदा से पूर्ण था, कुबलाय खान ने उसको जीतने के लिए अपने दो सामन्तों को बहुत-सी सेना देकर भेजा। १२६८ में इस सेना ने नौकाओं में चीन का समुद्र पार किया। जापान के तट पर पहुँचकर वहाँ कई ग्रामों को वह सेना ध्वंस करने लगी।

इतने में उत्तर से तूफ़ान उमड़ने लगा। सैनिक डर गये। उन्होंने सोचा कि यदि वे तुरत न चले गये तो उनकी नौकायें तूफ़ान में नष्ट हो जायेंगी। किन्तु वे नौकाओं में चार पाँच मील गये ही थे कि तूफ़ान और तेज़ हो गया। कई नौकाएँ एक दूसरे से टकराकर टूट फूट गईं। कई सैनिक समुद्र में डूब गये। कुछ नौकाएँ असली तट पर पहुँचीं। और कुछ एक निर्जन द्वीप में जा लगीं।

सैनिकों को पकड़ने के लिए उसने अपने सैनिकों को नौकाओं में भेजा।

जब उनको मालूम हुआ कि जापान के सैनिक उनको पकड़ने आ रहे थे, बड़े खान की सेना एक ओर हट गई। उन्होंने शत्रुओं को अन्दर आने दिया। फिर वे तट पर गये। जापानी नौकाओं को लेकर वे चले गये। इस तरह बड़े खान की सेना तो चली गई। जापान की सेना द्वीप में फंस गई। द्वीप में से निकले बड़े खान के सैनिकों को एक बात सूझी। वे अपनी नौकाओं को अपने देश न ले जाकर जापान की ओर ले गये। जापानवाले उन नौकाओं को देखकर असलियत न जान सके। उन्होंने सोचा कि वे नौकाएँ उनकी थीं। उन पर उनके झंडे थे। उनमें उन्हीं के सैनिक थे।

तूफ़ान शान्त हुआ। द्वीप में कई हज़ार आदमी आ लगे। कई तैरते तैरते आये। द्वीप में जो नौकाएँ थीं उनमें वे सब नहीं आ सकते थे। इसलिए सेनापति सामन्त और मुख्य अधिकारी नौकाओं में अपने देश चले गये। और तीस हज़ार सैनिकों को वहीं छोड़ते गये।

द्वीप में छोड़े गये सैनिकों के लिए कोई मुक्ति-मार्ग न था। उन्होंने सोचा कि उनको मरना ही होगा। जापान के सम्राट को इन सैनिकों की दुर्गति के विषय में मालूम हुआ। द्वीप में छोड़े गये इन सैनिकों को पकड़ने के लिए उसने अपने सैनिकों को नौकाओं में भेजा।

आखिर नौकाएँ तट पर लगीं और उनमें से जब सैनिकों ने निकलकर नगर पर हमला किया तो उनका मुकाबला करने के लिए नगर में कोई सैनिक न था। नगर शत्रुओं के आधीन हो गया, पर कहानी यहाँ न समाप्त हुई।

जापानी सैनिकों ने, जो द्वीप में फंस गये थे, जैसे तैसे नौकाएँ प्राप्त कीं। वे

अपने नगर गये। उन्होंने नगर को घेर लिया। उन्होंने नगर में से न किसी को आने दिया, न किसी को अन्दर ही जाने दिया। बड़े खान के सैनिकों को न सूझा कि क्या करें। आखिर वे हार मानने के लिए तैयार हो गये। शर्त यह थी कि जापानवाले उनके प्राण न लें और उनको हमेशा के लिए जापान में रहने दें।

* * *

मार्कोपोलो ने भारत के मार्ग में चम्पा देश देखा। आज जहाँ वीटनाम है, वहीं कहीं यह देश हुआ करता था। १२२८ में यहाँ का राजा बड़े खान द्वारा परास्त किया गया और उनका सामन्त हो गया। उस समय यह देश हाथियों और कई प्रकार के विशेष वृक्षों के लिए प्रसिद्ध था। इस देश के रिवाज के अनुसार यहाँ की कन्यायें राजा को भेंट में दी जाती थीं। वे कन्यायें, जिनसे राजा विवाह न करता था, औरों से विवाह कर सकती थीं। इसलिए इस चम्पा के राजा की कितनी ही पत्नियाँ और कितने ही बच्चे थे। मार्कोपोलो जब वहाँ पहुँचा तो चम्पा राजा के लड़के और लड़कियों की संख्या ३२६ थी।
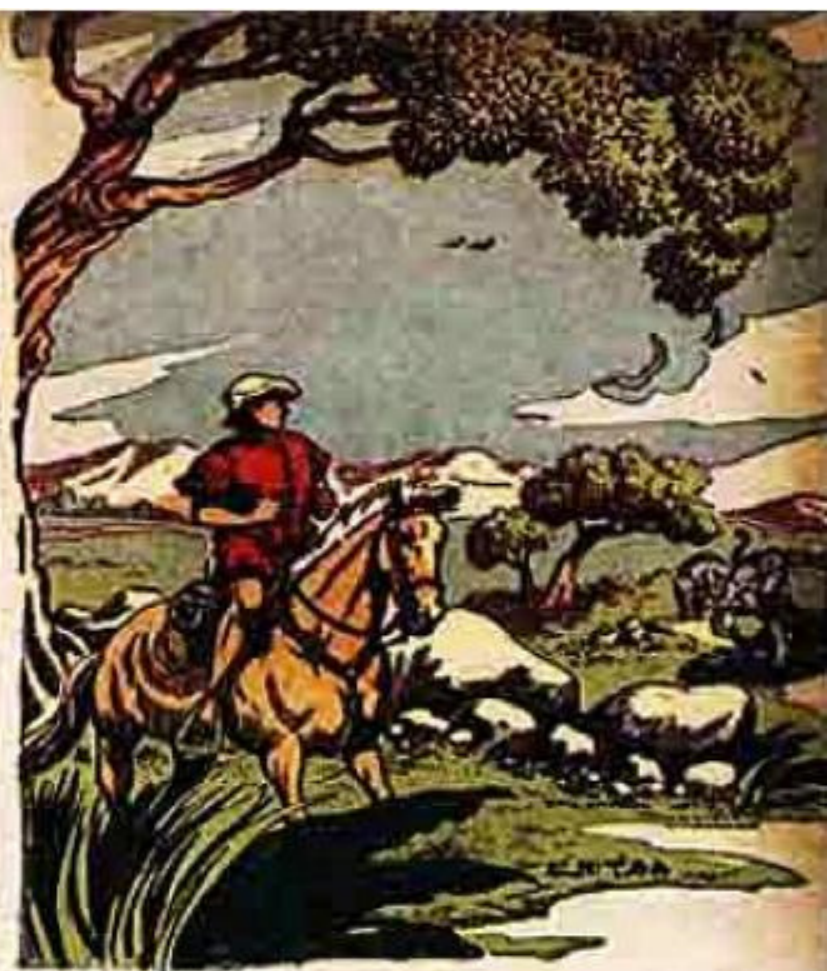
चम्पा से १५०० मील की दूरी पर जावा द्वीप था। यह सम्पन्न देश था। यहाँ अनन्त सुगन्धित द्रव्य मिलते थे। बड़े खान ने इस देश को न जीता था। मार्कोपोलो चम्पा देश से लोकक देश गया। यह स्वतन्त्र देश था। वहाँ बहुत सोना था। इस देश से कौड़ियाँ आस पास के देशों में भेजी जाती थीं।

वहाँ से मार्को चिन्टान द्वीप पहुँचा। इसके पास का मल्यूर द्वीप समुद्री व्यापार का अड्डा था। इन दोनों द्वीपों के पास छोटा जावा नाम का द्वीप था। इस द्वीप में आठ

राजा आठ राज्यों पर राज किया करते थे। इन द्वीपों से ध्रुव तारा न दिखाई देता था। यहाँ उसे जंगली हाथी और गेंड़े दिखाई दिये।

मार्कोपोलो और उसके अनुचरों को सुमात्रा में पाँच मास रह जाना पड़ा। यहाँ नरभक्षक रहा करते थे। यहाँ के राज्यों में एक का नाम फन्सूर था। मार्कोपोलो ने लिखा है कि यहाँ अच्छा कपूर तैयार किया जाता था और सागूदाना एक पेड़ के तने के रस से बनाया जाता था।

छोटे नाग से मार्कोपोलो अन्डेमान और निकोबर के रास्ते आया। उसने लिखा कि यहाँ कोई राजा न था। मनुष्य पशुओं की तरह रहते थे। कपड़े भी न पहिनते थे। परन्तु उनके पास अच्छे मोती होते थे। अन्डेमान में भी नरभक्षक थे।

मार्कोपोलो अन्डेमान से लंका आया। उसने लिखा है कि असली केम्प सिवाय यहाँ के और कहीं नहीं मिलते। यहाँ केम्प ही नहीं, गोमेध, इन्द्रनील, आदि मणियाँ भी मिलती थीं। कहा जाता था कि लंका के राजा के पास हथेली के बराबर असाधारण केम्प था। बड़े खान ने बड़ी सी कीमत देकर उसे खरीदने की सोची। पर लंका के राजा ने उसे बेचने से इनकार कर दिया क्योंकि वह केम्प उनके वंश में बहुत दिनों से चला आ रहा था।

लंका से मार्कोपोलो हमारे देश आया। इस देश के बारे में भी उसने बहुत कुछ लिखा। उसके विषय में हम अगले मास जान सकेंगे।

[अभी है]

[९]

मार्कोपोलो १२ वी शताब्दी के अन्तिम दशक में भारत आया। यहाँ वह कुछ दिन रहा। उसने बहुत-सी बातें यहाँ देखीं, जिनको उसने अपने ग्रन्थ में लिखा भी। इन बातों से ही हम उसकी यात्रा की कथा समाप्त कर रहे हैं।

सिंहल देश से ६० मील समुद्र में यात्रा करने के बाद माबार (चोल) देश आता है। इस देश में पाँच स्वतन्त्र राजा राज्य किया करते थे। माबार और सिंहल द्वीप के बीच जो खाड़ी थी, उसमें मोतियाँ मिला करती थीं। संसार में उपलब्ध अच्छी मोतियाँ यहीं निकाली गई थीं। यहाँ समुद्र खास गहरा नहीं है। कुछ व्यापारी मिल-मिलाकर एक नाव लेकर यहाँ आया करते। यहाँ इस प्रकार की बहुत-सी नौकायें आती हैं। एप्रिल और मई के पहिले आधे भाग में मोतियाँ निकाली जातीं। समुद्र में से मोतियों के सीपों को निकालनेवालों को वेतन पर रखा जाता। ये पानी में डूबते, तह से सीप निकाल कर लाते और व्यापारियों को देते। सीपों में छोटी-बड़ी तरह तरह की मोतियाँ होती हैं। मोतियों की सीपों को अच्छे पानी में रखने से माँस ऊपर आ जाता और मोतियाँ

नीचे चली आतीं। इस तरह व्यापारी असंख्य मोतियाँ जमा कर लेते। ताकि समुद्र में डूबनेवालों को कोई समुद्र प्राणी खा न ले इसलिए ब्राह्मण मन्त्र पढ़ा करते। इस काम के लिए ब्राह्मणों को सौ मोतियों में पाँच मोती मिला करतीं।

"माबार में दर्जी नहीं हैं। क्योंकि यह गरम देश है, इसलिए यहाँ के निवासी वस्त्र नहीं पहिनते, केवल अंगवस्त्र का ही उपयोग करते हैं। राजा भी केवल अंगवस्त्र ही पहिना करता। परन्तु उसके किनारों पर रत्न होते। इसलिए उनका मूल्य बहुत होता। उनका मूल्य निश्चित करना असम्भव था। उनसे एक महानगर खरीदा जा सकता था। उसकी आज्ञा थी कि बहुमूल्य रत्न राज्य से बाहर न ले जाये जायें।"

"इस देश में घोड़े नहीं पाले जाते। इसलिए बहुत-सा रुपया खर्च करके अरब देश से घोड़े मँगाये जाते हैं। इस देश में पति के मर जाने पर पत्नी भी उसके साथ चिता में जल जाती है। इस तरह करनेवाली स्त्रियाँ उत्तम समझी जाती हैं। यहाँ भोजन करनेवाले केवल दायें हाथ का ही उपयोग करते हैं, पीते समय पात्र को मुख पर नहीं लगने देते।"

"कर्ज़ देनेवालों का कर्ज़ वापिस न दिया जाता, तो कर्ज़दार के चारों ओर वे एक लकीर खींच देते और वह व्यक्ति तब तक उस लकीर को नहीं पार कर सकता था, जब तक वह कर्ज़ न चुका देता था। अगर कोई लकीर पार भी करता तो उसको मृत्यु दण्ड दिया जाता। राजा को ही यह भुगतते मार्को ने स्वयं अपनी आँखों देखा था।

राजा ने एक विदेशी व्यापारी से कर्ज़ लिया। वह ठीक समय पर कर्ज़ न चुका

पाया। राजा जब घोड़े पर आ रहा था, तो उस व्यापारी ने उसके घोड़े के चारों ओर लकीर खींच दी। जब तक राजा ने रुपया मँगवाकर, उस व्यापारी को दे न दिया, तब तक उसने लकीर न पार की।

"यहाँ शकुनों का बड़ा पक्का रिवाज़ है। मुख्यतया जो यात्रा पर जाते थे कई तरह के शकुन देखते हैं। अगर जानेवाले के जाते समय कोई छींक देता तो वह तुरत रुक जाता। जब तक दूसरी छींक की आवाज न सुन लेता, तो वह न उठता। राहुकाल में कुछ भी न किया जाता। यह राहुकाल हर रोज भिन्न भिन्न समय पर आता है। यहाँ घरों में छिपकलियाँ होती हैं, छिपकलियों की आवाजों के भी बहुत-से अर्थ हैं।"

मार्कोपोलो १२९० में मोटपल्ली बन्दरगाह में उतरा। उस समय आन्ध्र में रुद्रमदेवी का शासन था। उसके बारे में मार्कोपोलो ने यह लिखा है।

"इस देश की रानी बहुत ही ज्ञानी है। इसके पति के मरे हुए ५० वर्ष हो गये हैं। इसने फिर विवाह नहीं किया। चालीस वर्ष इसने पति की तरह धर्म और

न्याय के साथ शासन किया। प्रजा को जो उस पर आदर था, वैसा आदर सम्भवतः किसी भी राजा या रानी के प्रति नहीं दिखाया जाता।"

इस राज्य में हीरे मिलते हैं। जब पहाड़ों पर वर्षा होती है, तो नाले बहते हैं। उन नालों में पत्थरों के साथ हीरे भी बहते आते हैं। संसार में यहीं ही हीरे मिलते हैं। बढ़िया हीरे यहाँ से बड़े खान और राजा महाराजाओं के पास जाते हैं, क्योंकि साधारण व्यक्ति तो इनको खरीद न सकते थे। संसार में सब से अच्छे

दुशाले यहाँ बनते थे। इसको पहिनने के लिए महाराजा, महारानी ललचाया करते। यहाँ पशु-सम्पदा अधिक है। यहाँ जितनी बड़ी भेड़ें हैं, संसार में और कहीं नहीं हैं।

"इस देश में लाड नाम का एक राज्य है। यहाँ ही वैश्य पैदा होते हैं। संसार में इनसे अच्छे विश्वासपात्र व्यापारी कहीं नहीं हैं। जब विदेशों से व्यापारी आते हैं, तो उनका माल लेकर वे ठीक दाम पर बेचते हैं और उनका पैसा उनको बकायदा उनको दे देते हैं, भले ही वे इस देश के रीति रिवाज़ व तौर तरीके न जानते हों। वे इस काम के लिए पारिश्रमिक की भी आशा नहीं करते, जो कोई कृतज्ञतापूर्वक देता है उसे स्वीकार कर लेते हैं। ये माँस नहीं खाते। शराब नहीं पीते। हिंसा नहीं करते। उसको पाप मानते हैं। ये चोल देश से अच्छे मोती लाकर अपने राजा को बेचते हैं। जो दाम उन्होंने खुद दिया था राजा को बताते, राजा ठीक दुगना उनको देता।

भारत देश में सब पान खाते हैं। कुलीनों में तो यह आदत और भी है। पान में वे चूने के साथ कपूर आदि चीज़ों का भी सेवन करते हैं।

भारत का आखिरी राज्य नेच-मकान है। यहाँ मुस्लिम अधिक हैं। यहाँ धान के साथ गेहूँ भी अधिक पैदा होता है।

"माबार और इसके बीच देश पूर्वी महाद्वीप में सबसे अधिक उत्तम है। यहाँ के सब नगरों के बारे में कहना असम्भव है। (समाप्त)